International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 12
September 2017

संस्कृत साहित्य में संगीत चिन्तन

डॉ0 अन्जु रानी शर्मा
प्रा0 संगीत गायन
राजकीय महाविद्यालय सफीदों– जीन्द

शोध आलेख सारः– विश्वभर की समस्त प्राचीन भाषाओं में संस्कृत का सर्वप्रथम और उच्चस्थान है। संस्कृत भाषा आध्यामिक चिन्तन का आधार है। विश्व के लगभग हर विषय की जानकारी हमारे संस्कृत साहित्य में निहित है। इस भाषा में धार्मिक, साहित्यिक, आध्यात्मिक, दार्शनिक, वैज्ञानिक और मानविकी आदि प्रायः समस्त प्रकार के वाङ्मय की रचना हुई। संस्कृत भाषा का साहित्य इतना समृद्ध है कि अति प्राचीन होने पर भी इस भाषा की सृजन–शक्ति कुण्ठित नहीं हुई है, इसका धातुपाठ नित्य नए शब्दों को गढ़ने में समर्थ रहा है। इसी प्रकार यदि हम संगीत शब्द का आधार खोजें तो जब मनुष्य ने किसी भी भाषा में अपने विचारों को प्रकट करना सीखा तो स्वतः ही उसमें संगीत का भी समावेश होता चला गया। इस तरह से यदि संस्कृत साहित्य अति प्राचीन है तो संगीत की परम्परा भी उतनी ही प्राचीन व समृद्ध रही है। संस्कृत साहित्य के प्रसिद्ध ग्रन्थ ऋग्वेद, सामवेद, अर्थवेद और यजुर्वेद है।

मुख्य अंशः संस्कृत साहित्य, संगीत व वेद व उनकी भाषा

- सबसे पहले ऋग्वेद की रचना हुई और गायत्री को समर्पित गायत्री मन्त्रों की रचना भी उसी काल में हुई। यह ग्रन्थ देवताओं की स्तुति से सम्बन्धित रचनाओं का संग्रह है। ऋग्वेद की भाषा पद्यात्मक है लेकिन पद्य भी लय का ही एक प्रकार है। 'असतो मा सदगमय' वाक्य भी ऋग्वेद से ही लिया गया है। ऋग्वेद के मन्त्रों को कंठस्थ कर विशेष प्रकार से उच्चारण करने वाली प्रमुख व प्रसिद्ध स्त्रियाँ लोपामुद्रा, घोषा, शाची, पौलोमी व काक्षावृति थी। इन श्लोकों को विशेष रूप से लय में बोला करती थी।
- सामवेद प्राचीनतम ग्रन्थ वेदों का गीत–संगीत प्रधान वेद है। प्राचीन आर्यो द्वारा इसका सामगान किया जाता था। श्रीमद्भागवत गीता में लिखित है *''वेदों में संगीत रूपी सामवेद मेरा ही रूप है''* [1] तथा सामवेद संगीत का ही वेद है।

भारतीय संगीत शास्त्र के अनुसार सप्तक में 22 श्रुतियाँ होती हैं। ये 22 अलग–अलग तरह की आवाजें हैं जिन्हें मानव कानों द्वारा पहचाना जा सकता है। शास्त्रों के अनुसार संगीत में ये

श्रुतियाँ सामवेद से ली गई हैं। सामवेद की रचना ऋग्वेद में दिए गए मन्त्रों को गाने योग्य बनाने हेतु की गयी थी। *''ऋग्वेद का गेय रूपान्तरण सामवेद ही है।''* [2] सामवेद को भारत की प्रथम संगीतात्मक पुस्तक होने का गौरव प्राप्त है।

- संगीत की दृष्टि से अथर्ववेद में गाई जाने वाली रचनाएँ तो नहीं है परन्तु रोग तथा उनके निवारण हेतु जो रचनाएँ ली गई हैं उन्हें लय के एक विशेष प्रकार में बाँध कर बोला जाता था।

  सामवेद के समय 'स्वर' को यम भी कहा गया है। [3] साम का संगीत से इतना घनिष्ठ सम्बन्ध था कि साम को स्वर का पर्याय समझने लग गए थे।

  छंदाग्यो पनिषद् में यह बात प्रश्नोत्तर के रूप में स्पष्ट की गई है '' का साम्नो गतिरिति? स्वरइति होवाच''। साम का 'स्व' अपनापन 'स्वर' है।

''तस्य है तस्य सामनो यः स्ववेद,

भवति हास्य स्व, तस्य स्वर एव एवम'' [4]

अर्थात् जो साम के स्वर को जानता है उसे 'स्व' प्राप्त होता है। साम का 'स्व' स्वर ही है। उस समय में तीन स्वर 'ग रे सा' का गान सामिक कहलाता था। धीरे–धीरे गान चार, पाँच, छः और सात स्वरों के होने लगे। छह और सात स्वरों के बहुत ही कम साम मिलते हैं। साम के यमों (स्वरों) की जो संज्ञाए हैं उनसे उनकी प्राप्ति के क्रम का पता चलता है। गुरू द्वारा शिष्यों को मौखिक रूप से वेदों को कंठस्थ कराने के कारण इन 'वेदों' को 'श्रुति' की संज्ञा भी दी गई।

''वैदिक युग में यद्यपि नाटय कला के ज्यादा संकेत नहीं मिलते'' [5] *''परन्तु यजुर्वेद के तीसरे अध्याय में अभिनेता के बारे में वर्णित हैं।''* [6]

'आचार्य भरत' ने 'नाट्य शास्त्र' में नाट्य को तीनों लोकों का अनुकीर्तन कहा है जो विशाल भावों की अभिव्यक्ति से सरोबार है। ये सभी नाटक रस प्रधान हैं। आचार्य भरत मुनि ने नाट्य शास्त्र में सर्वप्रथम 'ध्रुवा' का उल्लेख किया है।

संस्कृत साहित्य की 2000 वर्षों की यात्रा में अनेक रचनाओं में इसका उल्लेख मिलता है। ध्रुवागान संगीत की सबसे प्राचीन विधाओं में से एक है। कालिदास के विक्रमोर्वशीयम बाणभट्ट के ग्रन्थों, दामोदर के कुट्टिनीमत, श्री हर्ष की रत्नावली, मुरारी के अनर्घराघव तथा राजशेखर के नाटकों में ध्रुवा गीतों के प्रयोगों के साक्ष्य मिलते हैं। *''प्रत्यचा तथा यज्ञ में आहुति देने में प्रयुक्त*

पात्र का दूसरा अर्थ ध्रुवा माना गया। 'स्वर, ताल एवं शब्द के गुथे हुए (निबद्ध) रूप को ध्रुवा कहते हैं।'' [7]

वर्तमान के सन्दर्भ में संस्कृत साहित्य में संगीत की भूमिका पर चिन्तन करें तो इस भाषा ने अनेकों बहुमूल्य खजानों को अपने में समेटा हुआ है जिससे सम्पूर्ण विश्व को परिचित करवाने की अति आवश्यकता है।

बसंत पंचमी को पिछले वर्ष जून 2016 में संस्कृत का पहला रॉक बैन्ड जिसने पूरे देश में संस्कृत के श्लोकों को और मन्त्रों को संगीत में ढाल कर अपने इस प्रयास से संस्कृत को एक नए रूप में परिचित कराया। इस बैन्ड के संस्थापक डा0 संजय द्विवेदी संस्कृत में पी.एच.डी. हैं और उन्होंनें बचपन से संगीत सीखा है। उनके अनुसार ''संस्कृत संगीत भाषागत और संगीतगत है परन्तु आधुनिक पीढ़ी इसमें रूचि नहीं रखती तब मैंने रॉकिंग पश्चिमी संगीत के साथ फिल्मों में जो गीत का स्थान आज है, नाटक में लगभग वहां स्थान ध्रुवा का था। जिसमें मन्त्रों और श्लोकों को ऐसे ढाला कि इसका रूप ही अद्भुत निखार ले आया। इसमें ऋग्वेद के मन्त्रों, शंकराचार्य के रचे 'भज गोविन्दम्, अभिज्ञान शकुन्तला के प्रेम पन्नों से मन्त्र और श्लोक लेकर सुन्दर संगीत में पिरोकर कविताओं का गद्य का प्रयोग करके इस आम साधारण व्यक्ति के जीवन से जोड़ा गया है।

इसी कड़ी में कु0वि0 कुरूक्षेत्र के संगीत विभाग द्वारा हरियाणा के 50 वर्ष पूरे होने पर वार्षिक मेले 'गीता जयन्ती' के सुवसर पर वहाँ की विभागाध्यक्ष द्वारा 'गीता के श्लोकों को अति सुन्दर व अति प्रभावी लय देकर, संगीत बद्ध करके गाया गया जिसे सम्पूर्ण विश्व में एक साथ सुना गया। विभागाध्यक्ष श्रीमती शुचिस्मिता शर्मा का यह प्रयास संस्कृत में संगीत की निहितता को अति प्रभावशाली दर्शाता है और हमें विश्व के हर विषय की जानकारी को सुलभ कराने का मार्ग दिखाता है।

साभार पुस्तक सूची:

संगीत रत्नाकर

आध्यात्मिक चिन्तन आधार हैं

संस्कृत भाषा

संगीत पारिजात 'अहोबल'

भरत का नाट्यशास्त्र

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 12
September 2017

सन्दर्भ ग्रंथ सूचिः–

1. आनन्द संगीत सुधा, आनन्द पब्लिकेशन, ज्वाला नगर, शाहदरा दिल्ली, पृ0–2
2. संगीत सूरसागर, (शौनक के अनुसार 'यम' के अंतर्गत उन्हीं स्वरों का अन्तभाव है, जो एक–दूसरे से श्रवणोग्य अन्तर पर स्थापित है), पृ0–16
3. भारतीय संगीत का इतिहास, , पृ0–93
4. डा0एस.एस. परान्जपये, भारतीय संगीत का इतिहास चौखम्बा सुरभारती, पृ0–55
5. डा0 कान्तिचन्द्र पांडेय, स्वतन्त्रकला शास्त्र प्रथम भाग, पृ0–35
6. यजुर्वेद संहिता, नाग प्रकाशक दिल्ली, अध्याय 50, पृ0–126
7. भरत कालीन नाट्य शास्त्र में नाटय के अन्तर्गत ध्रुवा नामक गीतों का विशिष्ट स्थान हैः पृ0–273